गीता जी की आरती

गीता जी की आरती

जय भगवद्गीते ,मैया जय भगवद्गीते।
कर्म ज्ञान भक्ति की, गंगा सुपुनीते - जय.....

धर्म अधर्म के रण में ,जब अर्जुन डोले।
गीता ज्ञान रहस्य यदुनंदन खोले - जय.....

श्रीकृष्ण मुख निकली ,वेदमयी वाणी।
ग्रन्थ शिरोमणि गीता ,माता कल्याणी - जय.....

ब्रह्म-योग ब्रह्म-विद्या ,मन को वश में करे।
आतम ज्ञान बढ़ावे ,पाप त्रयताप हरे - जय.....

सत्य धर्म ईश्वर की ,भक्ति सिखलावे।
कर्तव्य नीति निष्ठा ,मार्ग दिखलावे - जय.....

कुरुक्षेत्र में प्रगटी ,वीरों की माता।
करे अनुसरण जो इसका ,हरि दर्शन पाता - जय.....

मोह शोक भय हारी ,विघ्न विकार हरे।
जीवन जोत जगावे ,दूर अन्धकार करे - जय.....

कहत "मधुप" कर वन्दन ,आरती जो गावे।
बल भक्ति यश कीर्ति ,मुक्ति वर पावे - जय..... ।

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण **'मधुप'** (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/33173/title/geeta-ji-ki-arti

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |